इकाई 19 राज्य और अर्थव्यवस्था

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

इस इकाई में गौर विजय के पश्चात् दिल्ली सल्तनत की स्थापना के फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। इस इकाई में सल्तनत काल में हुए परिवर्तनों (अर्थव्यवस्था में) पर भी प्रकाश डाला गया है

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे:

- भू-राजस्व की प्रकृति और उसकी वसूली की प्रणालियां,
- राजस्व स्रोतों के वितरण की पद्धति,
- अलाउद्दीन खलजी के मूल्य नियंत्रण संबंधी उपाय,
- नगरीय अर्थव्यवस्था में दासों का प्रयोग और दासता के स्रोत, और
- अर्थव्यवस्था में मुद्रा का बढ़ता प्रयोग और मुद्रा प्रणाली।

19.1 प्रस्तावना

गौर शासकों की उत्तर भारत पर विजय और दिल्ली सल्तनत की स्थापना के फलस्वरूप तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तनों के साथ ही आर्थिक परिवर्तन भी हुए। विजेताओं की कर वसूली एवं वितरण और मुद्रा प्रणाली संबंधी सुस्पष्ट धारणाएं एवं कार्य प्रणालियां थीं। परन्तु, तत्कालीन व्यवस्थाओं को पूर्ण रूप से तत्काल परिवर्तित करना संभव नहीं था: प्रारंभ में नई धारणाओं एवं योजनाओं को पुरानी व्यवस्थाओं पर अध्यारोपित किया गया, और कालांतर में 15वीं शताब्दी के अंत तक विभिन्न सुल्तानों द्वारा इनमें संशोधन एवं परिवर्तन किए गए।

नए शासक अपनी रुचि एवं पसंद के मुताबिक सुख-साधन का उपभोग करते थे। गुलाम-मज़दूरी इस दृष्टि से अत्यधिक सहायक थी।

मौहम्मद हबीब के अनुसार, दिल्ली सल्तनत की स्थापना के फलस्वरूप हुए आर्थिक परिवर्तनों ने एक ऐसी व्यवस्था को जन्म दिया जो इससे पूर्व की व्यवस्था से अधिक श्रेष्ठ थी। उनके अनुसार, परिवर्तन इतने महत्वपूर्ण थे कि उन्हें "नगरीय-क्रान्ति" और "ग्रामीण क्रान्ति" के द्वारा निर्दिष्ट किया जा सकता है। डी.डी. कौसाम्बी ने "नई तकनीकी को ग्रहण कर उसे प्रसारित करने की दुर्बल मनोवृत्ति" को "मुस्लिम आक्रामकों"

द्वारा तोड़ने का श्रेय तो दिया, परन्तु उन्होंने परिवर्तनों को भारतीय "सामान्तवाद" में पहले से उपस्थित तीव्रकारी तत्वों से अधिक नहीं पाया।

आइए, इस इकाई में दिल्ली सल्तनत कालीन आर्थिक संस्थाओं और परिवर्तनों का अध्ययन करें।

19.2 राजस्व साधनों का वितरण

13वीं शताब्दी के दौरान एक बड़े क्षेत्र पर सुल्तानों का नियंत्रण हो गया। प्रारंभ में, नए विजित प्रदेशों को सेना- नायकों में बांट दिया गया, जो स्वयं और अपनी सेनाओं के रख-रखाव हेतु लूट या पराजित एवं अधीनस्थ ग्रामीण अभिजात वर्ग से प्राप्त उपहारों पर निर्भर थे। पूर्व शासकों के काल के विपरीत सैनिकों को नकद वेतन मिलता था।

भूमि कर अथवा **खराज** देने से इंकार करने वाले क्षेत्रों को **मवास** कहा जाता था, जिन्हें लूटा जाता अथवा सैनिक कार्यवाहियों द्वारा कर देने के लिए बाध्य किया जाता था। उन्होंने धीरे-धीरे राजस्व वसूली और वितरण की कार्य प्रणाली एक साथ स्थापित की।

19.2.1 इक्ता और खालिसा

नए शासकों ने **इक्ता** व्यवस्था कायम की, जिसमें राजनैतिक संरचना की एकता को बिना हानि पहुंचाए, राजस्व संग्रह और वितरण दोनों कार्य सम्मिलित किए गए। **इक्ता** एक भूमि अनुदान था एवं उसका प्राप्तकर्त्ता **मुक्ती** या **वली** कहलाता था। **इक्ता** व्यवस्था की आदर्श परिभाषा ग्यारहवीं शताब्दी के एक सेल्जुक राज्यवेत्ता निजाम-उल मुल्क तुसी द्वारा दी गई है (देखिए खंड 5)।

तुसी की परिभाषा के अनुसार **इक्ता** एक प्रकार का राजस्व संबंधी कार्यभार था, जो **मुक्ती** को सुल्तान की इच्छानुसार प्राप्त होता था। **मुक्ती** सुल्तान को देय भूमि कर और अन्य करों को उचित ढंग से प्राप्त करने का अधिकारी था, लेकिन उसका किसानों के लिए कार्य करने वालों, स्त्रियों तथा बच्चों एवं उनकी अन्य जायदाद पर कोई हक नहीं था। **मुक्ती** की सुल्तान के प्रति कुछ जिम्मेदारियां थीं, जिनमें प्रमुख सैन्य-दलों का अनुरक्षण करना एवं आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सुल्तान के लिए हाज़िर करना था। **इक्ता** एक स्थानांतरणीय कार्यभार था और **इक्ताओं** के स्थानांतरण की प्रथा प्रचलन में थी।

खालिसाः वह क्षेत्र जिसका राजस्व सीधे सुल्तान के निजी कोष के लिए वसूल किया जाता था, **खालिसा** कहलाए। अलाउद्दीन खलजी के शासन में **खालिसा** क्षेत्र में काफी वृद्धि हुई। परन्तु **खालिसा** पूरे राज्य में फैले हुए क्षेत्र नहीं थे। दिल्ली और इससे जुड़े हुए ज़िले तथा दोआब के भाग **खालिसा** के अंतर्गत आते थे। इल्तुतमिश के काल में तबरहिंद (भटिंडा) भी **खालिसा** के अंतर्गत था। अलाउद्दीन खलजी के अधीन संपूर्ण मध्य दोआब और रूहेलखंड के कुछ भाग **खालिसा** के अंतर्गत आ गए थे। परन्तु संभवतः फिरोज़ तुगलक के समय **खालिसा** के क्षेत्रफल में यथेस्ट कमी आई।

ऐसा कहा जाता है कि इल्तुतमिश (1210-36) द्वारा सुल्तान की फौज (**हश्म-ए कल्ब**) के सैनिकों को वेतन की जगह दोआब प्रदेश में "छोटे **इक्ता**" प्रदान किए गए। बलबन (1266-86) ने उनके पुनर्ग्रहण हेतु एक उत्साहहीन असफल प्रयास किया। अलाउद्दीन खलजी (1296-1316) ने ही सैनिकों को नकद वेतन देने की प्रथा को दृढ़ता से स्थापित किया। इस प्रथा को पुनः फिरोज़ तुगलक द्वारा बदला गया जिसने सैनिकों को उनके वेतन के स्थान पर गांवों को प्रदान करना प्रारंभ किया। इन्हें **वजह** कहा जाता था और उनके स्वामियों को **वजहदार**। ये आवंटन न केवल स्थायी बल्कि वंशानुगत प्रकृति के होते थे।

19.2.2 इक्ता व्यवस्था का संचालन

आप खंड 5 में **इक्ता** व्यवस्था के बारे में पढ़ चुके हैं। यहां हम इसके कुछ और पहलुओं पर ध्यान देंगे। सल्तनत की स्थापना के प्रारंभिक वर्षों में न तो इन आवंटनों की राजस्व आय ज्ञात थी न ही अधिन्यासी के सैन्यदल का आकार निश्चित था। तथापि, बलबन द्वारा कतिपय संशोधन और केन्द्रीय नियंत्रण की दिशा में कुछ प्रयास किए गए, जब उसने प्रत्येक **मुक्ती** के साथ एक **ख्वाजा** (लेखाकर) की नियुक्ति की। इससे यह अर्थ निकाला जा सकता है कि सल्तनत **इक्ता** की वास्तविक आय और **मुक्ती** के व्यय को आंकने का प्रयास कर रही थी।

इक्ता प्रशासन में प्रभावी परिवर्तन अलाउद्दीन खलजी के काल में हुआ। केन्द्रीय वित्त विभाग (**दीवान-ए विजारत**) ने संभवतया प्रत्येक **इक्ता** द्वारा प्राप्त होने वाली अनुमानित राजस्व आय का आकलन किया। लेखा-परीक्षण सख्त होता था, दंड कठोर थे, तबादले बार-बार होते थे और कई बहानों के आधार पर **इक्ता** की अनुमानित राजस्व आय में अक्सर वृद्धि (**तौफीर**) की जाती थी।

गियासुद्दीन तुगलक (1320-25) ने कुछ उदार नीति अपनाई। केन्द्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा अनुमानित राजस्व आय में वृद्धि, एक वर्ष के लिए, 1/10वां या 1/11वां भाग से अधिक नहीं हो सकती थी। **मुक्तियों** को अपने स्वीकृत वेतनों के अतिरिक्त 1/10वें से 1/20वें भाग तक की आय अपने पास रखने की इजाजत दी गई।

मौहम्मद तुगलक (1325-51) के काल में केन्द्रीय हस्तक्षेप अपने चरम बिंदु पर पहुंच गया। कई मामलों में एक ही क्षेत्र के लिए एक **वली** और एक **अमीर** की नियुक्ति की गई। **वली** का कार्य राजस्व संग्रह कर, उसमें से अपने वेतन को रखकर शेष को राजकोष भेजना होता था। **अमीर** अथवा सेनानायक का राजस्व वसूली से कोई संबंध नहीं था और वह अपना तथा अपने अधीन सैनिकों का वेतन संभवतया स्थानीय कोष से प्राप्त करता था। आप खंड 5 में पढ़ चुके हैं कि मौहम्मद तुगलक के शासनकाल में **इक्ताधारियों** को राजकोष से नकद भुगतान किया जाता था। इससे सेनानायकों में असंतोष फैला और मौहम्मद तुगलक के लिए राजनैतिक समस्याएं उत्पन्न हुई। फिरोज़ तुगलक ने इसमें कुछ रियायत देने का निश्चय किया। उसने सरदारों के नकद वेतनों में वृद्धि की तथा राजस्व (**महसूल**) का नवीन आकलन तैयार किया, जो **जमा** कहलाया।

फिरोज़ तुगलक के उत्तराधिकारियों द्वारा केन्द्रीय नियंत्रण को पुनः स्थापित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। लोदी शासकों (1451-1526) के काल में प्रशासनिक और राजस्व कार्यभागों को संयुक्त कर दिया गया तथा उन्हें **इक्ता** नहीं बल्कि **सरकार** और **परगना** कहा जाता था। सिकन्दर लोदी (1489-1517) के शासन काल में एक प्रकार की उप आवंटन की व्यवस्था प्रचलित थी। मुख्य अधिन्यासी (**इक्ताधारी**) अपने अधिन्यास (**इक्ता**) के कुछ भागों को अपने अधीनस्थों को हस्तांतरित करते थे, जो बाद में अपने सैनिकों को आवंटन करते थे।

19.2.3 भूमि अनुदान

जैसा कि आप जानते हैं, धार्मिक व्यक्तियों और संस्थाओं, जैसे दरगाहों, मस्जिदों और मदरसों एवं शासक वर्ग पर निर्भर अन्य ऐसे स्थानों, की देख-भाल राजस्व-आय के अनुदानों द्वारा होती थी। ये राजस्व अनुदान **मिल्क, इदरार,** और **इनाम** कहलाते थे। ये अनुदान सामान्य तौर पर न तो वापस लिये जाते थे न ही हस्तांतरित किए जाते थे। परन्तु, सुल्तान को इन अनुदानों को रद्द करने का अधिकार था। ऐसा कहा जाता है कि अलाउद्दीन खलजी ने लगभग सभी अनुदानों को निरस्त कर दिया था। गियासुद्दीन तुगलक द्वारा भी बड़ी संख्या में अनुदानों को रद्द किया गया। लेकिन, फिरोज़ तुगलक ने यह नीति बदलकर न केवल पहले प्रारंभ किए गए सभी अनुदानों को फिर जारी किया, बल्कि नए अनुदान भी स्वीकृत किए। सुल्तान की इस उदारता के बावजूद, अनुदानों का कुल योग, कुल अनुमानित राजस्व आय का लगभग 1/20वां भाग था। **अमीरों** ने भी अपने स्वयं के **इक्ताओं** से राजस्व अनुदान प्रदान किए। उल्लेखनीय है कि सुल्तान ये अनुदान न केवल **खालिसा** बल्कि **इक्ता** क्षेत्रों में भी प्रदान करते थे। इन अनुदानों में खेती की जाने वाली और साथ ही कृषि-योग्य भूमि जहां पैदावार उत्पन्न नहीं की गई हो, सम्मिलित थी।

बोध प्रश्न 1

1) आप **इक्ता** को किस प्रकार परिभाषित करेंगे?

....

....

....

....

2) मौहम्मद तुगलक द्वारा **इक्ता** व्यवस्था में क्या-क्या परिवर्तन किए गए?

....

....

....

....

3) सही वाक्य के आगे (√)और गलत वाक्य के आगे (×) चिह्न लगाइए:
   अ) अलाउद्दीन खलजी ने **मुक्तियों** को **इक्ताओं** द्वारा प्राप्त अतिरिक्त आय अपने पास रखने की अनुमति प्रदान की। ( )
   ब) गियासुद्दीन तुगलक द्वारा ठेके पर राजस्व वसूल करने वालों को **इक्ता** प्रदान किए गए। ( )
   स) फिरोज़ तुगलक के अधीन **जमा** का अर्थ अनुमानित राजस्व आय से था। ( )

19.3 भू-राजस्व और उसकी वसूली

भारत के नए शासक इस्लामी भूमिकर **खराज** से भली-भांति परिचित थे। **खराज** भूमि पर उत्पन्न पैदावार का हिस्सा होता था, न कि भूमि पर लगान। 13वीं शताब्दी के दौरान **खराज** ने लगभग भेंट का रूप ले लिया। इसका भुगतान एकमुश्त में, पहले के शासन के अधिपतियों द्वारा किया जाता था, जिनके साथ सल्तनत शासक वर्ग ने एक समझौता कर लिया था। दूसरी ओर, सल्तनत की आज्ञा न मानने वाले क्षेत्रों **(मवास)**, जहां ऐसे समझौते संभव नहीं थे, से लूटमार और लड़ाई द्वारा वसूली की जाती थी। यह वसूली संभवतया मुख्यतः मवेशियों और दासों के रूप में की जाती थी।

दिल्ली सल्तनत के स्रोत ऐसे कोई संकेत नहीं देते हैं कि अलाउद्दीन खलजी (1296-1316) के शासन से पूर्व **खराज** के निर्धारण और उसकी वसूली को व्यवस्थित करने का कोई गंभीर प्रयास किया गया हो।

19.3.1 अलाउद्दीन खलजी की कृषि नीति

आप खंड 5 में अलाउद्दीन खलजी की कृषि नीति के संबंध में कुछ विस्तार से पढ़ चुके हैं। उसका प्रयास था कि राज्य की ओर से राजस्व की मांग बढ़ाकर आमदनी को बढ़ाया जाए, सीधी वसूली करके बिचौलियों को मिलने वाले मुनाफों को समाप्त किया जाए।

आप जानते हैं कि राज्य की मांग अनाज के रूप में निर्धारित की जाती थी, परन्तु वसूली साधारणतया नकद में होती थी। बर्नी से हमें ज्ञात होता है कि राजस्व संग्रह-कर्ताओं को राजस्व की वसूली इतनी कड़ाई से करने के आदेश दिए जाते थे जिससे कि किसान अपनी उपज को खेतों पर ही बेचने को विवश हो जाएं। अन्यत्र बर्नी लिखता है कि अलाउद्दीन खलजी ने दोआब क्षेत्र को **खालिसा** में शामिल कर वहां से प्राप्त कर **(महसूल)** को सैनिकों को नकद वेतन देने में खर्च किया।

साथ ही, हमें इसी लेखक का एक विरोधाभासी कथन मिलता है कि सुल्तान ने किसानों को नकद के स्थान पर अनाज के रूप में कर अदा करने का आदेश दिया। इरफान हबीब के अनुसार इसका संबंध दोआब में **खालिसा** के केवल कुछ भागों से रहा होगा। सुल्तान को अपने अन्न-भंडारों के लिए वहां से आपूर्ति की आवश्यकता थी। अन्यथा, वसूली सामान्य तौर पर नकद में होती थी।

इस नई नीति ने ग्रामीण बिचौलियों को किस प्रकार प्रभावित किया, इसके बारे में हम इकाई 20 में अध्ययन करेंगे।

अलाउद्दीन खलजी द्वारा प्रारंभ की गई कर प्रणाली दीर्घकाल तक जारी रही, यद्यपि गियासुद्दीन तुगलक (1320-25) ने कुछ सीमा तक इसे संशोधित किया और **खोत** और **मुकद्दमों** को अपनी उपज और मवेशी पर कर देने से मुक्त किया। लेकिन उसने अपने किसानों पर किसी प्रकार के उप कर लगाने की स्वीकृति नहीं दी।

19.3.2 मौहम्मद तुगलक की कृषि नीति

प्रारंभ में मौहम्मद तुगलक ने अलाउद्दीन खलजी की भूमि की माप पर आधारित राजस्व संग्रह प्रणाली को गुजरात, मालवा, दक्खन, दक्षिण भारत और बंगाल में लागू किया। बाद में उसने कृषि कर की दर में बहुत वृद्धि कर दी। बर्नी का कथन कि यह वृद्धि दस या बीस गुना अधिक थी निश्चय ही अतिशयोक्तिपूर्ण है

परन्तु इससे स्पष्ट होता है कि वृद्धि बहुत बड़ी मात्रा में की गई। बर्नी का कहना है कि अतिरिक्त नए कर **(अबवाब)** भी लगाए गए। दूसरे करों, **खराज**, चराई और गृह कर को भी सख्ती से वसूला जाने लगा। याह्या के अनुसार मवेशियों को दागा गया और घरों की गिनती की गई, जिससे कोई कर से मुक्त न हो सके। लेकिन इन उपायों से अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि **खराज** के आंकलन हेतु **वफा-ए फरमानी** (राज्य द्वारा निर्धारित पैदावार) और **निर्ख-ए फरमानी** (राज्य द्वारा घोषित मूल्य) को आधार बनाया गया। इससे स्पष्ट अर्थ निकलता है कि राजस्व की गणना करते वक्त उपज और मूल्यों के जिन आंकड़ों का उपभोग किया गया, वे वास्तविक नहीं थे।

उससे आसानी से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उपज और मूल्यों का सरकारी निर्धारण निश्चय ही बढ़ा कर दिया गया था। वास्तविक उपज के बजाय बढ़ी हुई उपज का प्रयोग और बाज़ार में चल रहे मूल्यों से कहीं अधिक मूल्यों के उपभोग से उत्पाद की कीमत तथा राज्य की हिस्सेदारी में वृद्धि अतिरंजनापूर्ण थी। राजस्व मांग में इस वृद्धि से जुताई योग्य भूमि कम होती गई, किसानों का पलायन हुआ और जैसा कि हम इकाई 20 में देखेंगे, दोआब और दिल्ली के आसपास विशाल किसान आंदोलन हुए। इससे दिल्ली को होने वाली अनाज की आपूर्ति बंद हो गई और लगभग 7 वर्षों तक, 1335 से 1342, अकाल की चोट सहनी पड़ी।

मोहम्मद तुगलक वह पहला सुल्तान था, जिसने इन समस्याओं से जूझते हुए कृषि को बढ़ाने हेतु एक कृषि नीति को निरूपित करने का प्रयास किया। उसने जुताई योग्य भूमि को सुधारने तथा सिंचाई के लिए कुएं खोदने जैसे कार्यों हेतु **सोनधर** नामक कृषि ऋण प्रारंभ किया। बर्नी के अनुसार 1346-47 तक 70 लाख **टंका** (अफीफ के अनुसार 2 करोड़ **टंका**) **सोनधर** के अंतर्गत वितरित किए गए, परंतु किसानों को शायद ही इसका कोई अंश मिला।

कृषि को बढ़ाने के लिए **दीवान-ए अमीर-ए कोही** नामक नया मंत्रालय स्थापित किया गया। इसके दो मुख्य कार्यों में खेती योग्य भूमि में विस्तार और खेती के अयोग्य भूमि को सुधारने तथा बोई जाने वाली फसलों में सुधार लाना था। यह सलाह दी गई कि गेहूं के स्थान पर गन्ना और गन्ने के स्थान पर अंगूरों और खजूरों की कृषि की जानी चाहिए।

सुल्तान अपनी कृषि सुधार योजना को लागू करने में इतना दृढ़ निश्चित था कि एक धर्मशास्त्री के यह कहने पर कि नकदी में ऋण देकर अनाज के रूप में ब्याज प्राप्त करना एक पाप था, उसे फांसी दे दी गई।

लेकिन फिर भी बर्नी का मानना है कि ये सब उपाय लगभग पूर्णतः असफल सिद्ध हुए। फिरोज़ तुगलक (1351-88) ने इस नीति को त्याग दिया। साथ ही कृषि उप करों को भी समाप्त किया और गृह कर और चराई कर वसूलने पर रोक लगा दी। लेकिन उसने **खराज** (भूमि कर) से भिन्न एक दूसरा कर **जज़िया** किसानों पर लगाया। उसने हरियाणा में, जहां उसने नहरें खुदवायीं, एक प्रकार का सिंचाई कर प्रारंभ किया।

बाद के काल से संबंधित बहुत कम सूचनाएं मिलती हैं, लेकिन शासक जो भी रहे हों, भूमि कर की नकद धन के रूप में वसूली शायद इब्राहीम लोदी (1517-26) के समय तक जारी रही। मुद्रा की कमी और खाद्यान्नों के मूल्यों में गिरावट को देखते हुए उसने भू-राजस्व को वस्तु तथा अनाज के रूप में प्राप्त करने के आदेश दिए।

बोध प्रश्न 2

1) अलाउद्दीन खलजी की भू-राजस्व प्रणाली का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) सही और गलत वाक्यों के आगे (√) अथवा (×) का चिह्न लगाइए:

अ) वे क्षेत्र जो बिना बल प्रयोग के **खराज** अदा नहीं करते थे, **मवास** कहलाते थे। ( )

ब) गियासुद्दीन तुगलक ने **खोतों** और **मुकद्दमों** की फसलों और मवेशियों पर कर लगाया। ( )

स) इब्राहीम लोदी ने राजस्व वसूली नकद धन के रूप में करने का आदेश दिया। ( )

19.4 अलाउद्दीन खलजी का बाज़ार नियंत्रण

अलाउद्दीन खलजी की नीतियों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था तक ही सीमित न रहकर नगरीय बाज़ार व्यवस्था को भी प्रभावित किया। उसे उन सात अधिनियमों को जारी करने का श्रेय दिया जाता है, जो बाज़ार नियंत्रण उपायों के रूप में जाने जाते हैं। बर्नी ही, जो इस संबंध में हमारा मुख्य स्रोत है, केवल ऐसा प्रमाण है जिससे इन अधिनियमों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त होती हैं।

सुल्तान ने सभी वस्तुओं, खाद्यान्नों से लेकर वस्त्रों, दासों, मवेशियों इत्यादि (अधिनियम 1) की कीमतों को निर्धारित कर दिया। अपने उपायों को सफल बनाने के उद्देश्य से सुल्तान ने इन कीमतों को बलपूर्वक लागू करने की पूरी व्यवस्था की। एक बाज़ार नियंत्रक (**शहना-ए मण्डी**) , **बारिदों** (खुफिया अधिकारी) और **मुनहियानों** (गुप्तचरों) की नियुक्ति की गई (अधिनियम 2)। खाद्यान्न व्यापारियों को **शहना-ए मंडी** के नियंत्रण में रखा गया और उनसे जमानत ली गई (अधिनियम 4)। सुल्तान स्वयं प्रतिदिन इन तीनों स्रोतों से अलग-अलग जानकारी प्राप्त किया करता था (अधिनियम 7)। जमाखोरी (**इहतिकार**) पर प्रतिबंध था (अधिनियम 5)। बाज़ार में सख्त नियंत्रण सुनिश्चित करते हुए भी सुल्तान ने जरूरी आवश्यकताओं जैसे अनाजों और अन्य वस्तुओं की कम दरों पर नियमित आपूर्ति को नज़रअंदाज़ नहीं किया।

न.	सामग्री	अलाउद्दीन खलजी	मौहम्मद तुगलक	फिरोज़ तुगलक
				(मूल्य : **जीतल** प्रति मन)
1.	गेहूँ	$7\frac{1}{2}$	12	8
2.	जौ	4	8	4
3.	धान	5	14	—
4.	दालें	5	—	4
5.	मोठ	3	4	4
6.	शक्कर (सफेद)	100	80	—
7.	शक्कर (खांड)	60	64	120, 140
8.	भेड़ का गोश्त	10	64	—
9.	घी	16	—	100

मूल्य सूची के.एम. अशरफ की पुस्तक, **लाइफ एण्ड कंडीशन्स आफ द पीपुल आफ हिन्दुस्तान** दिल्ली, 1960 पृ. 160। विभिन्न स्रोतों के आधार पर तैयार की गई इस मूल्य-सूची से स्पष्ट है कि मौहम्मद तुगलक के शासन काल में कीमतें बढ़ी तथा पुनः फिरोज़ तुगलक के शासन काल में वे अलाउद्दीन खलजी के काल में प्रचलित मूल्य-स्तर पर पहुँच गई।

1. तत्कालीन इतिहासकारों द्वारा वर्णित सल्तनत कालीन मूल्य सूची

यह बात सुस्पष्ट है कि बाज़ारों में खाद्यान्न व्यापारी उसी अवस्था में आपूर्ति कर सकते थे, यदि उन्हें सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध होते। प्रकटतः इसी कारण सुल्तान ने दोआब में भू-राजस्व को इतनी सख्ती से वसूलने का आदेश दिया कि किसान खेतों के निकट ही अपनी पैदावार **कारवानियों** (खाद्यान्न व्यापारी) को बेचने को मजबूर हो गए।

सुल्तान ने दिल्ली और राजस्थान में झाइन नामक स्थान पर अन्न भंडार गृहों की व्यवस्था की। दोआब की **खालिसा** भूमि से भूमि कर वस्तुओं के रूप में वसूल किया गया। यह अनाज राज्य के अन्न भंडार गृहों में जमा होता था (अधिनियम 3)। मुल्तानी वस्त्र व्यापारियों को वस्त्र खरीदने और बाज़ार में लाने हेतु 20 लाख **टंका** का अग्रिम ऋण दिया गया।

इस संदर्भ में सभी स्रोतों से यह ज्ञात होता है कि सुल्तान को मूल्यों को कम रखने और बाज़ार में वस्तुओं की प्रचुर आपूर्ति जारी रखने में सफलता प्राप्त हुई। परन्तु इस बात को लेकर विभिन्न मत हैं कि सुल्तान द्वारा बाज़ार नियंत्रण क्यों लागू किया गया और किस-किस क्षेत्र में इसको लागू किया गया। दरबारी कवि

अमीर खुसरो ने इन उपायों को अतिशय उदारतापूर्ण तथा साधारण जनता के सुख-चैन व कल्याण हेतु बताया है। चिश्ती संत नासिरूद्दीन महमूद (चिराग-ए दिल्ली) ने इसे सुल्तान द्वारा सभी की भलाई के लिए किया गया प्रयास बताया है। परन्तु इतिहासकार बर्नी का मत बिल्कुल भिन्न है। इसके लिए वह सुल्तान की परोपकारी भावनाओं को श्रेय न देकर ठोस वित्तीय कारण बताता है। सुल्तान एक बड़ी सेना के निर्माण हेतु चिन्तित था और वह मंगोल आक्रमणों के विरुद्ध अन्य उपाय जैसे सामरिक महत्व वाले स्थानों पर किलों का निर्माण और दिल्ली के चारों ओर दीवार खड़ी करके किलेबंदी करना चाहता था। यदि अतिरिक्त घुड़सवारों और सैनिकों को तत्कालीन वेतनमानों पर नियुक्त किया जाता तो राजकोष पूर्ण रूप से खाली हो जाता। वेतनमानों में कमी उसी अवस्था में की जा सकती थी यदि कीमतों को पर्याप्त रूप से कम स्तर तक रखा जाता।

बर्नी के ये विचार अधिक तर्कसंगत प्रतीत होते हैं। चूंकि मुख्य **लश्करगाह** (सैनिक छावनी) दिल्ली में थी और अधिकतर शाही सैनिक दिल्ली और उसके आस-पास तैनात थे, बाज़ार नियंत्रण का प्रमुख केन्द्र स्वयं दिल्ली ही था। तथापि, चूंकि दोआब के आस-पास के क्षेत्रों द्वारा खाद्यान्नों की सस्ते दरों पर आपूर्ति अनाज के व्यापारियों को प्राप्त होती थी, उन स्थानों में भी कीमतों की कम दर प्रचलित थी।

बाज़ार नियंत्रण लंबे समय तक जारी नहीं रहा और अलाउद्दीन खलजी के शासन काल के बाद हमें इसके बारे में सूचना नहीं मिलती है। मूल्य नियंत्रण में सफलता प्राप्त करने के लिए एक अत्यन्त कार्य-कुशल और चौकन्ने प्रशासन की जरूरत थी। अतएव, इसके जारी न रहने का एक संभाव्य कारण पर्याप्त रूप से योग्य प्रशासन की कमी होना रहा होगा। परन्तु, इरफान हबीब, अलाउद्दीन खलजी के उत्तराधिकारियों द्वारा मूल्य नियंत्रण की नीति को त्यागने के लिए एक भिन्न मत प्रकट करते हैं। चूंकि, कम क़ीमतों के प्रचलन का अर्थ उन क्षेत्रों से कम राजस्व प्राप्ति था, मूल्य नियंत्रण कम कीमतों वाले क्षेत्र के सीमित होने तक ही व्यावहारिक था और अधिकांश व्यय भी वहीं केन्द्रित था। मंगोलों के खतरे के टलते ही सेना और व्यय को, दिल्ली और उसके आस-पास ही केन्द्रित न कर, उसका विकेंद्रीकरण करना आवश्यक हो गया। अतः अब राज्य कोषागार का हित मूल्य नियंत्रण को समाप्त करने में था।

बोध प्रश्न 3

1) अलाउद्दीन खलजी द्वारा "मूल्य नियंत्रण" लागू करने के हेतु किए गए उपायों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) संक्षेप में इनके कारण बताइए:

अ) "मूल्य नियंत्रण" लागू करने के विषय में बर्नी के विचार :

....

....

....

....

....

ब) अलाउद्दीन खलजी के उत्तराधिकारियों के काल में मूल्य नियंत्रण समाप्त करना :

....

....

....

....

19.5 मुद्रा प्रणाली

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही मुद्रा अर्थव्यवस्था में बहुत वृद्धि हुई, जो विशेष रूप से 14वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बढ़ी। चूंकि, मुद्रा अर्थव्यवस्था में प्रगति का अर्थ सरल शब्दों में, लेन-देन या व्यापार में मुद्रा के अधिक प्रयोग से है (इसे मुद्रीकरण भी कहा जाता है)। दिल्ली सल्तनत की स्थापना के उपरांत बड़ी मात्रा में सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों को जारी करना, इसी भारतीय अर्थव्यवस्था के मुद्रीकरण की एक सहवर्ती प्रक्रिया थी।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पूर्व काल में सिक्कों की, विशेष रूप से शुद्ध चांदी के, कमी रहती थी। प्रारंभिक गौरी विजेताओं ने टकसालों को अत्यन्त कम मात्रा में चांदी-युक्त तांबे के सिक्कों को जारी करते पाया। प्रारंभ में मुद्रित किए जाने वाले सिक्कों की संख्या को बढ़ाने के अतिरिक्त कोई परिवर्तन नहीं किए गए। सिक्कों पर देवी लक्ष्मी या बैल और घुड़सवार इत्यादि की प्रतिकृतिया अंकित रहती थी। केवल इसके ऊपर एक विकृत रूप से नए शासक का नाम नागरी लिपि में उत्कीर्ण किया जाने लगा। इन सिक्कों को **देहलीवाल** कहा जाता था।

इल्तुतमिश (1210-36) को दिल्ली सल्तनत की मुद्रा के मानकीकरण का श्रेय दिया जाता है। उसके द्वारा स्थापित मुद्रा प्रणाली अपने सारभूत रूप में दिल्ली सल्तनत के काल में जारी रही। उसने सोने व चांदी के **टंका** और तांबे के **जीतल** सिक्के जारी किए। **जीतल** की संगणना उत्तर भारत में एक **टंका** के 1/48वें भाग से और देवगिरि की विजय के पश्चात् दक्खन में 1/50वें भाग से की जाती थी।

सोने व चांदी के मध्य 1 : 10 का एक निश्चित अनुपात स्थापित कर दिया गया था।

मुद्रा प्रणाली के अध्ययन हेतु ऐतिहासिक साक्ष्य ही नहीं वरन् अभी भी उपलब्ध सिक्कों के रूप में भौतिक प्रमाण (इन्हें मुद्रा-विषयक प्रमाण कहते हैं) भी मौजूद हैं।

सल्तनत टकसालों द्वारा सामान्य तौर पर तीन धातुओं के सिक्के जारी किए जाते थे: सोना, चांदी और बिलन (चांदी की सूक्ष्म मात्रा युक्त तांबा)। मुख्य सिक्के **टंका** और **जीतल** होते थे, परन्तु कुछ छोटी मुद्राएं भी प्रचलन में थी। बर्नी **दांग,** और **दिरम** का वर्णन करता है जो राजधानी दिल्ली में प्रचलित थे। उत्तर भारत में निम्नलिखित मुद्राओं के मध्य समीकरण इस प्रकार था:

1 चांदी **टंका** = 48 **जीतल** = 192 **दांग** = 490 **दिरम**

बंगाल द्वारा प्रेषित सोना व चांदी, 13वीं शताब्दी के दौरान सिक्कों की ढलाई का मुख्य स्रोत था। उत्तर भारत और बाद में दक्खन के खजानों पर कब्जा, सोने व चांदी के सिक्कों की ढलाई में बहुत सहायक रहा

सल्तनत की टकसालों ने न केवल सरकारी कोष के लिए सिक्के जारी किए बल्कि निजी व्यापारियों द्वारा लाए गए सोने-चांदी और विदेशी सिक्कों को भी मुद्रांकित किया।

अलाउद्दीन खलजी के शासन काल तक चांदी की मुद्राएं प्रमुख थीं। गियासुद्दीन तुगलक के शासन काल से सोने और बिलन की तुलना में चांदी के सिक्कों की संख्या में गिरावट हुई। मौहम्मद तुगलक के अधीन सोने के सिक्के चांदी के सिक्कों पर छा गए और फिरोज़ तुगलक के अधीन चांदी के सिक्के लगभग लुप्त ही हो गए। 15वीं शताब्दी में बिलन सिक्के प्रचलन में प्रभावी रहे क्योंकि लोदी शासकों (1451-1526) द्वारा अन्य सिक्के जारी नहीं किए गए।

मौहम्मद तुगलक की प्रतीक-मुद्रा

इल्तुतमिश द्वारा प्रारंभ की गई मुद्रा प्रणाली में केवल एक अभिनव प्रयोग मौहम्मद तुगलक द्वारा किया गया था। सुल्तान ने तांबे व पीतल की मिश्र धातु का एक सिक्का जारी कर उसकी संगणना चांदी के **टंके** के बराबर घोषित की। इस सिक्के पर पहली बार फारसी में अभिलेख भी था। इस नई मुद्रा का प्रत्यक्ष मूल्य इसके मूलभूत मूल्य से (इसे बनाने में प्रयोगित धातु की कीमत) से कहीं अधिक था। इसलिए इसे प्रतीकात्मक मुद्रा कहा गया। पड़ोसी एशियाई साम्राज्यों में प्रतीक-मुद्रा को जारी करने के प्रयास हो चुके थे। चीन में कुबलई खाँ (1260-94) ने कागज की प्रतीक-मुद्रा जारी की और यह प्रयोग सफल रहा। फारस (ईरान) में कैखत्तु खाँ (1293) ने भी प्रतीक-मुद्रा चलाने का प्रयास किया था, परंतु यह असफल रहा।

मोहम्मद तुगलक का प्रयोग भी पूर्णतः असफल रहा, शायद इसलिए कि इस नई मुद्रा की आसानी से नकल की जा सकती थी। बर्नी अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से लिखता है कि प्रत्येक 'हिन्दू' घर एक टकसाल बन गया (बर्नी का हिन्दू घरों पर यह आरोप शायद इसलिए था क्योंकि सोने-चांदी के कारीगर और **सर्राफ** अधिकांशतः हिन्दू थे)। तथापि, सुल्तान ने इस असफलता को सौम्यता के साथ स्वीकार किया और प्रतीक-मुद्रा को राजकोष द्वारा शुद्ध मुद्रा में बदल दिया गया।

बोध प्रश्न 4

1) प्रतीक-मुद्रा को जारी करने की विवेचना कीजिए।

....

....

....

....

....

2) सही कथन के आगे (√) और गलत कथन के आगे (x) का चिह्न अंकित कीजिए:
   अ) अलाउद्दीन खलजी द्वारा सल्तनत की मुद्रा प्रणाली स्थापित की गई। ( )
   ब) उत्तर भारत में चांदी का एक **टंका** 48 **जीतलों** के बराबर था। ( )
   स) दक्खन में सिक्कों हेतु चांदी के मुख्य स्रोत स्थानीय शासकों के खजाने थे। ( )
   द) फिरोज़ तुगलक के शासन काल में चांदी के सिक्कों की संख्या सोने के सिक्कों से बहुत अधिक थी। ( )

19.6 दास प्रथा और दास व्यापार

गौरी शासकों ने भारत में दास प्रथा का प्रचलन देखा, जहां इसका एक प्राचीन इतिहास रहा था। इस विषय में उनके लिए भी कोई नैतिक आशंकाएं बाधक नहीं थीं। दास प्रथा इस्लाम में स्वीकृत थी और इस्लामी देशों में यह प्रचलित थी। इरफान हबीब के अनुसार, गज़नवियों और गौरियों के उत्तरी भारत पर आक्रमण, जूलियस सीजर के इंग्लैंड पर आक्रमण की भांति, आंशिक रूप से गुलामों को प्राप्त करने के उद्देश्य से थे। एक युद्ध की सफलता सोना, चांदी, मवेशी और घोड़ों के साथ-साथ पकड़े गए दासों की संख्या से आंकी जाती थी। कुतबुद्दीन ऐबक ने 1195 में गुजरात पर अभियान के दौरान 20 हज़ार और 1202 में कालिंजर पर आक्रमण कर 50 हज़ार दास प्राप्त किए। सल्तनत की स्थापना के बाद भी अविजित क्षेत्रों में लड़ाइयों द्वारा गुलामीकरण की प्रक्रिया जारी रही। बलबन के रणथम्भौर अभियान और दक्खन में मलिक काफ़ूर के मुहिमों का एक प्रमुख उद्देश्य गुलामों को प्राप्त करना था।

दासों को प्राप्त करने का एक अन्य स्रोत विद्रोही गांवों (मवास) की लूट-मार था, जो क्षेत्र सल्तनत को **खराज** अदा करने से मुकर जाता था। इन स्रोतों से प्राप्त दासों की संख्या बहुत अधिक थी। अलाउद्दीन खलजी (1296-1316) के शासनकाल में 50,000 दास थे। यह संख्या फिरोज़ तुगलक (1351-88) के समय 1,80,000 तक पहुंच गई। सुल्तान के अतिरिक्त अमीरों के पास निजी तौर पर बड़े-बड़े दासों के दल होते थे, जिनमें बड़ी संख्या में औरतें भी सम्मिलित थी। यहां तक कि अभिजात गरीब वर्ग भी दास रखता था।

नए शासक वर्ग, जो अपनी पसंद के अनुसार कार्य करवाना चाहता था, के लिए दास बहुत महत्व के थे। प्रारंभ में कुछ सीमा तक पारंपरिक भारतीय शिल्पकर्मियों और कारीगरों को नए कुलीन वर्ग की मांगों और नई उत्पादन तकनीकी जैसी चरखे और रूई धुनने के यंत्र के प्रयोग में मुश्किल आई होगी। अप्रशिक्षित दासों को किसी भी कार्य में दक्ष किया जा सकता था। फिरोज़ तुगलक के दासों में 12,000 कारीगर सम्मिलित थे।

एक बड़ा दास बाजार था। बर्नी ने अलाउद्दीन खलजी द्वारा विभिन्न उम्र के दासों की कीमत निश्चित करने का ब्यौरा दिया है। दासों की बहुलता ने भारत से इस्लामी देशों में दासों के निर्यात को प्रोत्साहित किया। लेकिन फिरोज़ तुगलक ने दासों के निर्यात को बंद करवा दिया।

बोध प्रश्न 5

1) सही कथन के आगे (√) और गलत के आगे (×) का चिह्न लगाइये :
   अ) गुलाम केवल सुल्तान और उसके अमीरों द्वारा रखे जाते थे। ( )
   ब) गौरी के अभियान आंशिक रूप से दास प्राप्ति के इच्छुक आक्रमणकारियों के अभियान थे। ( )
   स) फिरोज़ तुगलक के अधीन बड़ी संख्या में दास शिल्पकर्मी थे। ( )
   द) अलाउद्दीन खलजी ने भारत से दासों के निर्यात पर रोक लगाई। ( )

2) दिल्ली सल्तनत में दासों की आपूर्ति के मुख्य स्रोत क्या थे?
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

19.7 सारांश

इस इकाई में आपने भारतीय अर्थव्यवस्था पर दिल्ली सल्तनत के प्रभाव का अध्ययन किया। हमने देखा कि धीरे-धीरे किस प्रकार पहले से प्रचलित राजस्व वसूली और वितरण की व्यवस्थाएं परिवर्तित हुई, नकद लेन-देन बढ़ा, और शुद्ध चांदी के सिक्के प्रारंभ किए गए।

19.8 शब्दावली

जीतल : तांबे का एक सिक्का, 48 **जीतल** = 1 **टंका**

कारवानी : अनाज व्यापारी

खराज : भू-राजस्व

महसूल : अनुमानित राजस्व

मवास : विद्रोही गांव या क्षेत्र जहां से बल प्रयोग द्वारा राजस्व वसूली की जाती थी

मदरसा : मुस्लिम शिक्षण संस्थान

मिल्क, इदरार, इनाम : राजस्व मुक्त अनुदान

वजह/वजहदार : देखें खंड 5

वली : **इक्ताधारी**/प्रांतीय राज्यपाल

19.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें उप-भाग 19.2.1
2) देखें उप-भाग 19.2.2

बोध प्रश्न 2

1) देखें उप-भाग 19.3.1
2) (अ) √ (ब) × (स) ×

बोध प्रश्न 3

1) देखें भाग 19.4
2) देखें भाग 19.4

बोध प्रश्न 4

1) देखें भाग 19.5
2) (अ) × (ब) √ (स) √ (द) ×

बोध प्रश्न 5

1) (अ) × (ब) √ (स) √ (द) ×
2) देखें भाग 19.6